श्रीसीतारामाभ्यां नमः।

# प्रबन्धरत्नावली

## शिक्षाप्रबन्धों और स्तोत्रोंका सुन्दर संग्रह।

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थकृत

भाषानुवादसहित।

आचार्यशिरोमणि श्री १००८ जगद्गुरुश्रीरामनारायणाचार्यजीमहाराज महामुनीन्द्रकी गरीयसी आज्ञासे श्रीटीलाद्वारपीठके धर्मप्रचारवि-भागाध्यक्षपण्डितराज श्रीमाधवाचार्यकाव्यतीर्थद्वारा प्रकाशित।

प्राप्तिस्थानः-

**श्रीटीलाद्वारपीठ (श्रीदाऊजीका मन्दिर)**

डाकोर (गुजरात)

| | | |
|---|---|---|
| माघ कृष्ण ७ | प्रथमावृत्ति | सं. २०१० वि.। |
| रामानन्दाब्द ६५५ | १००० प्रति | सने १९५४ ई. |

मुद्रक : पुरुषोत्तमदास शंकरदास पटेल

श्री उत्कृष्ट मुद्रणालय

गांधीरोड : अहमदाबाद

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।

# प्रबन्धरत्नावली

## शिक्षाप्रबन्धों और स्तोत्रोंका सुन्दर संग्रह।

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थकृत
भाषानुवादसहित।

आचार्यशिरोमणि श्री १००८ जगद्गुरुश्रीरामनारायणाचार्यजीमहाराज
महामुनीन्द्रकी गरीयसी आज्ञासे श्रीटीलाद्वारपीठके धर्मप्रचारवि-
भागाध्यक्षपण्डितराज श्रीमाधवाचार्यकाव्यतीर्थद्वारा प्रकाशित।

प्राप्तिस्थानः-
श्रीटीलाद्वारपीठ (श्रीदाऊजीका मन्दिर)
डाकोर (गुजरात)

| | | |
|---|---|---|
| माघ कृष्ण ७ | प्रथमावृत्ति | सं. २०१० वि.। |
| रामानन्दाब्द ६५५ | १००० प्रति | सने १९५४ ई. |

मुद्रक : पुरुषोत्तमदास शंकरदास पटेल
श्री उत्कृष्ट मुद्रणालय
गांधीरोड : अहमदाबाद

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

# * प्रस्तावना *

आनन्दभाष्यकर्त्तारमानन्दपथदर्शकम् ।
आनन्दनिलयं वन्दे रामानन्दं जगद्गुरुम् ॥१॥
जानकीजानकीकान्तकान्तपादाब्जषट्पदम् ।
सुरद्रुमकुतं वन्दे टीलाचार्यं जगद्गुरुम् ॥५॥
जगन्मङ्गलकर्त्तारं मङ्गलाम्बुनिधिं तथा ।
वन्दे महामुनीन्द्रं श्रीमङ्गलार्यं जगद्गुरुम् ॥३॥

हिन्दूधर्मोद्धारक अनन्त श्रीविशिष्ट आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज यतिराज श्रीसम्प्रदायाचार्यकी अनुपम अनुकम्पासे यह सचित्र प्रबन्धरत्नावलीनामक ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। भण्डारीपोलके श्रीनरसिंहमन्दिरके महान्त पण्डित श्रीपुरुषोत्तमदासजीमहाराज "वैष्णवभूषण' और महात्मा श्रीरामदासजी बौठाबालेके साथमें मैं दिवालीके बाद प्रधानटीलाद्वारापीठ (दाऊजीका मन्दिर) डाकोरमें आचार्यमन्दिर देखने गयाथा। तब श्रीटीलाचार्यसिंहासनासीन श्री महान्त श्री१००८ जगद्गुरु श्रीरामनारायणदाससी महाराज महामुनीन्द्रजीने मुझसे कहा कि—'श्रीटीलाचार्यद्वारेके सन्तों और सद्गृहस्थ सेवकोंका आचार्योपदेशग्रन्थके प्रकाश करनेके लिये आग्रह है।'

मैंने कहा श्रीटीलाचार्यजयन्तीपर प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु श्रीमहान्तजीने कहा कि इसी कुम्भमेलाके श्रीरामानन्दजयन्ती (माघ कृष्ण ७) के सुन्दर अवसर पर प्रकाशित होना चाहिये। तदनुसार यह संग्रहग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।

प्रबन्धरत्नावलीमें 'वैष्णवलक्षणनिरूपण' 'प्रबोधकलानिधि' और 'वेदान्तचिन्तामणि' ये तीन शिक्षाप्रबन्ध हैं। शेष भगवान् तथा

आचार्योंके स्तोत्र हैं। प्रथम प्रबन्ध श्रीसम्प्रदायाचार्य आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज यतीन्द्रकृत श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर ग्रन्थका एक अंश है। उसमें वैष्णवोंका लक्षण निरूपित है। द्वितीय प्रबन्ध द्वारपीठाचार्य जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजीमहाराज व्रतीन्द्रकृत है। उसमें श्रीसम्प्रदायके सम्पूर्ण सिद्धान्त संक्षेपसे वर्णितहैं। और तृतीय प्रबन्धमें जगद्गुरु श्रीमङ्गलाचार्यजी महाराज महामुनीन्द्रजीने विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तानुकूल समस्त वेदान्तके सारका वर्णन करके 'गागरमें सागर' की उक्तिको चरितार्थ कर दिया है। संस्कृत न जाननेवालोंके ज्ञानके लिये तीनों शिक्षाप्रबन्धों का भाषानुवाद मैंने कर दिया है।

इस प्रशंसनीय कार्यके लिये उक्त श्रीमहान्तजी महाराजको कोटिशः धन्यवाद है। आप द्वारागादीके आचार्यके कर्त्तव्यका पूर्णतया पालन कर रहे हैं। स्थान (दाऊजीके मन्दिर–डाकोर) में भगवद् भागवत सेवा तथा गुजरातप्रान्त और मालवामें हिन्दूजनताको धर्मोपदेश करते हैं। और प्रत्येक कुम्भमेलेमें धर्मप्रचारार्थ तथा सन्तसेवार्थ सर्वकार्योंको छोड़कर श्रीडाकोरखालसेके साथ स्वयं पधारते हैं। वहां पर आपके खालसेमें हजारों साधुसन्त भोजन भजन और धर्मोपदेश करते हैं। अब प्रत्येक द्वारागादीके आचार्य महानुभावोंको शिथिलता छोड़कर उक्त श्रीमहान्तजीके सदृश धर्मप्रचार करनेमें लगजाना चाहिये। यह मेरी पुनः पुनः प्रार्थना है। श्रीरामानन्दजयन्ती माघ कृष्ण ७ सं. २०१० वि.। ता. –१–१९५४ ई०

निवेदकः–**स्वामीश्री वैष्णवाचार्य वेदान्ततीर्थ**

**व्रणदेवड़ी-राममन्दिर,**

शारंगपुर दरवाजा बाहर, **अहमदाबाद-नं. २**

# सूचीपत्र


| | | |
|---|---|---|
| १ | श्रीरामानन्दाष्टकम् .... | १ |
| २ | वैष्णवलक्ष्णनिरूपणम् .... | ३ |
| ३ | श्रियः श्रियः प्रपत्तिषट्कम् .... | ६ |
| ४ | श्रीप्रबोधकलानिधिः .... | ७ |
| ५ | प्रपत्तिषट्कम् । .... | १८ |
| ६ | श्रीटीलाचार्याष्टकम् .... | १९ |
| ७ | श्रीटीलाचार्यपञ्चस्तवी .... | २१ |
| ८ | प्रपत्तिकुसुमाञ्जलिः .... | २२ |
| ९ | परम्परावन्दनम् .... | २७ |
| १० | श्रीमङ्गलाचार्याष्टकम् .... | २८ |
| ११ | वेदान्तचिन्तामणिः .... | ३० |
| १२ | श्रीबोधायनपञ्चकम् .... | ३५ |


# शुद्धिपत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १४ | विषयै | विशयै |
| ७ | १७ | नस्कार | नमस्कार |
| ९ | १९ | पन्नगा | पन्नगाः |
| ११ | ६ | याम्धु | याम्बु |
| १५ | १६ | रचिता | रचितां |

सूचना—भूलोंको सुधारकर पढ़ना चाहिये ।

अनुरूपौ मिथः प्रेममयौ प्राणमयौ निधी ।
प्रीतिप्रदौ च सर्वज्ञौ सीतारामौ गतिर्मम ॥१॥
मिथश्चित्तस्थितौ शश्वन्मिथश्चाभिन्नरूपिणौ ।
कार्यकारणरूपौ च सीतारामौ गतिर्मम ॥२॥
विशिष्टौ चिदचिद्भ्याञ्च शिष्टौ श्रुतिकदम्बकैः ।
मिथोऽनपायिनौ नित्यौ सीतारामौ गतिर्मम ॥३॥
आधारौ सर्वलोकानां सर्वलोकनियामकौ ।
भजतां मुक्तिकर्त्तारौ सीतारामौ गतिर्मम ॥४॥
अनुकूलौ श्रितानाञ्च प्रतिकूलौ श्रितद्विषाम् ।
नीलपीतदुकूलौ च सीतारामौ गतिर्मम ॥५॥
महानिधी दरिद्राणामनाथानां महाश्रयौ ।
योगिनाञ्च महाध्येयौ सीतारामौ गतिर्मम ॥६॥
सितासितविधातॄणां सितासितफलप्रदौ ।
सत्यौ सितासितौ रम्यौ सीतारामौ गतिर्मम ॥७॥
विभू परतरावर्च्यौ गुणाब्धी दोषवर्जितौ ।
जगद्धेतू शरण्यौ च सीतारामौ गतिर्मम ॥८॥

सदाचार्यसुरेन्द्रश्रीमङ्गलाचार्यनिर्मितम् ।
सीतारामाष्टकञ्चैतत् सर्वमङ्गलकारकम् ॥९॥

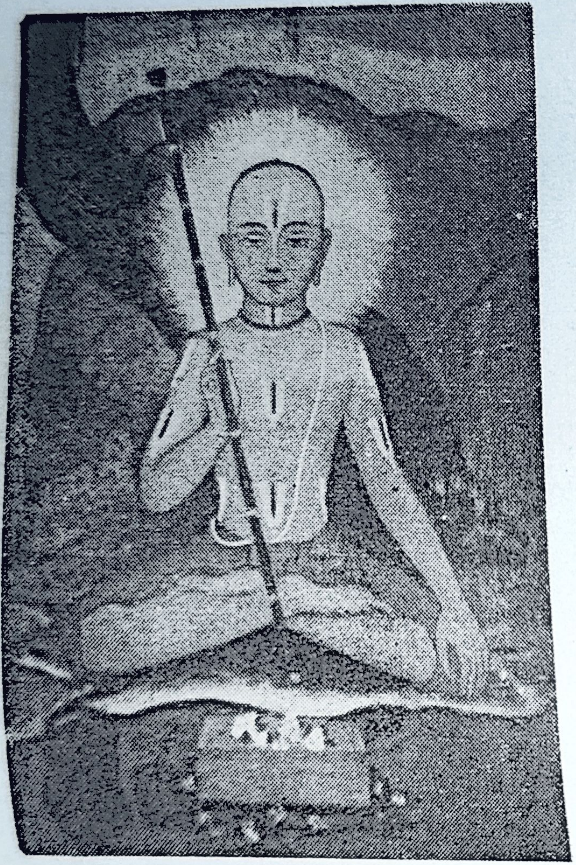

बोधायनवृत्तिकार महर्षि श्रीबोधायन

(जगद्‌गुरुश्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी)

श्रीसम्प्रदायाचार्य आनन्दभाष्यकार श्री १ १ ० ८

जगद्‌गुरुश्रीरामानन्दाचार्यजी यतिसार्वभौम

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

आनन्दभाष्यकारजगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्याय नमः ।

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थप्रणीतं

# ❀ श्रीरामानन्दाष्टकम् ❀

न योगो नो यागः प्रभवति महामोहहनने
न वा ज्ञानं दानं बलमपि न वा बन्धुनिवहः ।
समर्थस्तत्रापि प्रथित इह यद्वाक्यनिचयः
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ १ ॥

सुरम्ये यद्भाष्ये नयनपथगे दोषरहिते
विवर्त्ते दुर्गर्त्ते पतनभयलेशो न विदुषाम् ।
मतिः सांख्यैस्तर्कैर्भवति न कदाचिद्विचलिता
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ २ ॥

यदीया सद्वाचो विविधविषयैर्मूढमनुजं
विधातुं देवानामपि गुरुमिहात्यन्तचतुराः ।
शलाका वा सिद्धा निगमनिहितार्थप्रकटने
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ३ ॥

यदीयाः सद्दण्डाः शरणरहितानां शरणदा
यदीये पादाब्जे विनतजनवाञ्छासुरतरू ।
यदीयश्चालम्बः सकलभवबन्धप्रशमनं
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ४ ॥

यदीयश्चोद्देश्यं जनविसरदुःखापहरणं
यदीयश्चादेशो जनकतनयानाथशरणम् ।
विशुद्धं यत्कृत्यं सततमिह लोकोपकरणं
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ५ ॥

मनोज्ञा यत्कान्ती रतिपतिमहादर्पदमनी
कृपादृष्टिर्यस्य प्रणतजनतापप्रशमनी ।
सुधावद् यद्वाणी निखिलजगदामोदजननी
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ६ ॥

यदीयः सिद्धान्तो विमलधिषणानां सुखकरः
श्रुतीनां युक्तीनां विविधविधबाधेन रहितः ।
विशिष्टाद्वैताख्यः कुमतिमतिपक्षप्रविजयी
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ७ ॥

विचित्रा यद्गाथा श्रवणसुखदाऽभीष्टफलदा
सुहृद्या चाविद्यामलहृदनवद्या त्रिपथगा ।
यशस्वी योगीशः शमिदमियतीनां क्षितिपतिः
प्रभू रामानन्दः स मम हृदयाब्जे विलसतु ॥ ८ ॥

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
रामानन्दाष्टकञ्चेदं भूयादाचार्यतुष्टये ॥ ९ ॥

आनन्दभाष्यकारभगवद्रामानन्दाचार्ययतिराजप्रणीत-

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करस्थं

## ❀ वैष्णवलक्षणनिरूपणम् ❀

समुच्यते सम्प्रति लक्षणं सन्महात्मनां सद्गुणवैष्णवानाम् ।
विरिञ्चिशम्भुश्रितरामपादारविन्दयुग्मस्थितचेतसां तु ॥१॥

अब तो श्रीब्रह्माजी और श्रीशङ्करजीसे समाश्रित भगवान् श्री रामचन्द्रजीके चरणारविंदयुगलमें स्थित चित्तवाले तथा सद्गुणशाली वैष्णव महात्माओंका श्रेष्ठ लक्षण कहा जाता है ॥ १ ॥

धृतोर्ध्वपुण्ड्रस्तुलसीसमुद्भवां दधच्च मालाममलो हि कण्ठतः।
सज्जन्मकर्माणि हरेरुदाहरेद् गुणाँश्च नामानि शुभप्रदानि ॥२॥

दोषरहित वैष्णव शरीरमें द्वादश उर्ध्वपुण्ड्र और कण्ठमें तुलसीकी माला (कण्ठी)को धारण करता हुआ भगवान्के कल्याण-प्रद नाम गुण दिव्यजन्म (अवतार) और दिव्यकर्मोंका कीर्त्तन करे। यहांपर तुलसीकण्ठी धारणको तुलसीके हीरा और तुलसीकण्ठा के धारणका भी उपलक्षण समझना चाहिये ॥ २ ॥

धनुर्धरस्याशृणुयान्निरन्तरं कथाश्च गायेत् सुयशोऽङ्कितां मुहुः।
रूपं तदीयं तु चराचरात्मकं पश्यन् सतां सङ्गमुदारधीश्चरेत् ॥३॥

उदारबुद्धिशाली वैष्णव धनुर्धारी भगवान् श्रीरामजीकी

सुन्दर यशोंसे चिन्हित कथाको निरन्तर अच्छीतरह सुने और बारंबार गान करे*। तथैव चराचरात्मक सम्पूर्ण विश्वके अन्तर्यामी भगवान् श्रीरामजीका रूप देखता हुआ सन्तोंके सङ्गको अवश्य करे ॥३॥

**चापादिपञ्चायुधचिन्हिताङ्कः समीक्ष्य हृष्टश्च हरिप्रियानसौ ।**
**तथाविधान् भक्तिपरः समर्चयेत् सुवैष्णवाञ्जन्मफलादि संस्तुवन् ॥४॥**

भगवान्‌के धनुर्बाण इत्यादि पञ्चायुधोंसे अङ्कित शरीरवाला वह वैष्णव उक्त प्रकारके भगवत्प्रिय श्रेष्ठ वैष्णवोंको देखकर हर्षयुक्त होता हुआ स्वजन्मफल इत्यादिकी स्तुति करता हुआ भक्तियुक्त होकर उन वैष्णवोंका पूजन करे ॥ ४ ॥

**पञ्चायुधाङ्का भुवि वैष्णवा ये मुखाग्रजक्षत्रियवैश्यशूद्राः ।**
**स्त्रियस्तथाऽन्येऽपि च विष्णुरूपा जगत्पवित्रप्रपवित्रिणस्ते ॥५॥**

---

* हमारे आदरणीय श्रीवैष्णव महात्मागण प्राचीन समयमें खालसों जमातों स्थानों भण्डारों और पवित्र तीर्थोंमें भगवान्‌के सामने नियमसे भगवान्‌की श्रीरामायणादि कथाओंका श्रवण गान और कीर्त्तन बहुत सुन्दर करते थे। अब इस पवित्र कर्ममें शिथिलता आ रही है। यह आचार्यचक्रचूडामणि भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराजकी आज्ञापालनमें शिथिलता हो रही है। इसलिये हमें सावधान होना चाहिये और कविसम्राट् श्रीरामानन्दसम्प्रदायशिरोमणि आचार्यपाद गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी रचित श्रीरामचरितमानस आदि भगवत्कथाओंका श्रवण तथा गान कीर्तन अवश्य करना चाहिये। श्रीरामायणकी तरह अन्य आचार्यग्रन्थों और रामानन्दायन आदि ग्रन्थोंका श्रवण और गान करना चाहिये।

पृथिवीपर भगवान्के पञ्चायुधोंसे अङ्कित जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र स्त्री तथा अन्य वैष्णव महानुभाव हैं, वे विष्णुरूप हैं अर्थात् विष्णुतुल्य हैं। और जगत्को पवित्र करनेवाले तीर्थादिकों के भी पवित्र करनेवाले हैं ॥ ५ ॥

**ते सर्वतीर्थाश्रयभूतदेहा देशे महाभागवता वसन्ति ।**
**यत्रैव तद्दर्शनतत्स्थितिभ्यां जातः स पुण्यो निखिलाघशून्यः ॥६॥**

उन वैष्णव महात्माओंके देह सर्व तीर्थोंके आश्रय हैं। वे महाभागवत महानुभाव जिस देशमें रहते हैं वह उन वैष्णव महात्माओंके दर्शन और निवाससे पवित्र और सर्वथा पापरहित हो जाता है ॥ ६ ॥

**तदर्चनात् तत्पदनीरपानात् तत्सङ्गतेस्तत्प्रणतेर्विधानात् ।**
**तद्भोजनानन्तरभोजनाच्च स्यात् कोटिजन्मार्जितपापनाशः ॥७॥**

उन वैष्णव महानुभावोंके पूजनसे, उनके चरणामृतके पीनेसे उनके सङ्गसे, उनको प्रणाम करनेसे और उनको भोजन करानेके अनन्तर (पीछे) स्वयं भोजन करनेसे करोडों जन्मोंद्वारा उपार्जित पापोंका नाश हो जाता है ॥ ७ ॥

**कार्पासकैः सप्तभिरद्भुतैर्गुणैः सुनिर्मितं तत् कटिसूत्रमुत्तमम् ।**
**कौपीनकं वस्त्रयुगं च धारयेत् तथोर्ध्वपुण्ड्रादिकमेव वैष्णवः ॥८॥**

भगवान् भाष्यकार आठवें श्लोकद्वारा विरक्त वैष्णवोंके वेशभूषाका प्रतिपादन करते हैं कि अद्भुत कपासके सात तन्तुओंसे बने हुए कटिसूत्र (आड़बन्द) कौपीन और दो वस्त्र (एक ओढ़नेका दूसरा कमरमें पहननेका) तथा ऊर्ध्वपुण्ड्रादिको वैष्णव धारण करे। यहां

पर सूती आड़वन्द (कटिसूत्र) मूंजके आड़वन्दकाभी उपलक्षण है। ऊर्ध्वपुण्ड्रादिमें आदि शब्दसे शिखा यज्ञोपवीत और कमण्डलु समझना चाहिये ॥ ८ ॥

---

श्रियः श्रियै नमः।

श्री११०८ जगद् गुरुश्रीश्रियानन्दाचार्यप्रणीतं

## श्रियः श्रियः प्रपत्तिषट्कम्

समस्तलोकप्रभवामदोषां महाम्बुधिञ्चामितसद् गुणानाम्।
अजादिदेवार्चितपादपद्मां श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ १ ॥
मुखप्रभानिर्जितशारदेन्दुं विशालनीलाम्बुजतुल्यनेत्राम्।
तडिल्लतामञ्जुलदिव्यदेहां श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ २ ॥
जनान् प्रपत्तिं परिशिक्षयन्तीं पत्ये प्रपन्नाँश्च निवेदयन्तीम्।
श्रिताय कल्याणततिं सृजन्तीं श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ ३ ॥
हिमाहिमांशुप्रभृतीन् पदानां विभासयन्तीं नखरप्रभाभिः।
स्वयम्प्रकाशां निगमावगम्यां श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ ४ ॥
विभुप्रियामाश्रितदुःखहन्त्रीं विभुस्वरूपां जगतो नियन्त्रीम्।
विभूषितां सद्भिभवैरलौकिकैः श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ ५ ॥
परात्पराञ्चातिपवित्रभावां सुमुक्तिदामाश्रितकल्पवल्लीम्।
दयामयीं निग्रहवृत्तिशून्यां श्रियः श्रियं भूमिसुतां प्रपद्ये ॥ ६ ॥

प्रपत्तिषट्कमेतच्छ्रीश्रियानन्दार्यनिर्मितम्।
भूतानां भूतये भूयाद् भूमिजायाः प्रसादतः ॥

श्रीसीतारामाभ्यां नमः।

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः। श्रीमते टीलाचार्याय नमः।

श्रीटीलाद्वारपीठसंस्थापकश्री१००८जगद्गुरुश्रीटीलाचार्यप्रणीतः

# ❁ प्रबोधकलानिधिः ❁

वैष्णवभाष्यकारस्वामिश्री वैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थप्रणीतभाषानुवादसहितः।

जानकीनायकारब्धां नत्वाऽऽचार्यपरम्पराम्।
कुर्वे सिद्धान्तबोधाय सत्प्रबोधकलानिधिम्॥

जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजी (श्रीसाकेतनिवासाचार्यजी) व्रतिराज (ब्रह्मचारियोंके राजा) कहते हैं कि मैं श्रीजानकीनायक भगवान् श्री रामजीसे आरब्ध (शुरु) हुई आचार्यपरम्पराको (श्रीरामजी श्री जानकीजी तथा श्रीहनुमान् ब्रह्मा, वशिष्ट, पराशर, व्यास शुकदेव, बोधायनवृत्तिकार महर्षि बोधायन (पुरुषोत्तमाचार्य) गङ्गाधराचार्य सदानन्दाचार्य रामेश्वरानन्द द्वारानन्द देवानन्द श्यामानन्द श्रुतानन्द चिदानन्द पूर्णानन्द श्रियानन्द हर्यानन्द राघवानन्द आनन्दभाष्यकार श्री११०८ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य यतिसार्वभौम अनन्तानन्द तथा पयोहारी श्रीकृष्णदासजी इत्यादि आचार्योंकी परम्पराको) नस्कार करके साम्प्रदायिकसिद्धान्तोंके जाननेकेलिये सुन्दर प्रबोधकलानिधिनामक प्रबन्धको बनाता हूं। प्रबोध शब्दका अर्थ है उपदेश और कलानिधिका अर्थ है चन्द्रमा। चन्द्रमामें १६ कलायें होती हैं। इस

ग्रन्थमें भी १६ श्लोक हैं। दिनके तापसे सन्तप्त पुरुषको चन्द्रमा शान्ति देता है। यह ग्रन्थ भी संसारतापसंतप्त पुरुषोंको शान्ति देता है। इसलिये आचार्यपादने इसका नाम "प्रबोधकलानिधि" रखा है।

**रामो ब्रह्म परात्परं सकलकृद् रामं विना नो गती**
**रामेणैव विनाश्यते मृतिभयं रामाय नित्यं नमः।**
**रामादेव च विश्वमेतदुदितं रामस्य वश्यं तथा**
**रामे तिष्ठति लास्यते च वदत त्वं राम संरक्ष नः॥१॥**

श्रीरामजी परात्पर ब्रह्म हैं और समस्त जगत्के कर्त्ता हैं। श्रीरामजीके विना कोई गति (उपाय) नहीं है। मृत्युका भय श्रीरामजीसे नष्ट होता है। नित्य ही श्रीरामजीको नमस्कार है। यह सम्पूर्ण जगत् श्रीरामजीसे ही उत्पन्न हुआ है, श्रीरामजीके ही वशमें है, श्रीरामजीमें स्थित है और श्रीरामजीमें ही लीन होगा। बोलो "हे श्रीरामजी हम सबकी रक्षा करो" ॥ १ ॥ आचार्यशिरोमणि श्रीटीलाचार्यजी महाराजने इस श्लोकमें सातों विभक्तियोंसे युक्त राम शब्दका प्रयोग किया है।

**रामं कीर्त्तय कीर्त्तनीयरसने कर्णद्वयाकर्णय**
**श्रीमद्रामकथां करौ च कुरुतं रामार्चनं मुक्तिदम्।**
**रामं पश्य विलोचनद्वय चिरं चेतः स्मर त्वं सदा**
**जिघ्र घ्राण च रामपादतुलसीं रामं नम त्वं शिरः॥२॥**

हे कीर्त्तनीयरसना तू श्रीरामजीका कीर्त्तन कर। हे दोनों कान तुम श्रीरामजीकी कथाको सुनो। और हे दोनों हाथ तुम मुक्ति

देनेवाली श्रीरामजीकी पूजाको करो। हे दोनों नेत्र तुम श्रीरामजीको बहुत कालतक देखो (दर्शन करो) हे चित्त तू श्रीरामजीका सदा स्मरण कर। हे नासिका तू श्रीरामजीके चरणपर चढ़ी हुई तुलसी को सूंघ। और हे शिर तू श्रीरामजीको नमस्कार कर ॥ २ ॥

**तत्त्वं नैव परेशदिव्यगुणकाच्छ्रीरामचन्द्रात् परं**
**मुक्त्यै नास्ति गतिस्तथा रघुपतेर्भक्तेः प्रपत्तेः परा।**
**निर्दोषश्च मतं परं न हि विशिष्टाद्वैततो वैदिकं**
**श्रीरामान्न हि कीर्त्तनीयमपरं मुक्तिप्रदं प्राणिनाम् ॥३॥**

दिव्यगुणसम्पन्न परमेश्वर भगवान् श्रीरामजीसे पर कोई तत्त्व नहीं है। अर्थात् भगवान् श्रीरामजी ही परात्पर (सर्वसे पर) तत्त्व हैं। मुक्तिकेलिये भगवान् श्रीरामजीकी भक्ति और शरणागतिसे उत्कृष्ट (श्रेष्ठ) कोई उपाय नहीं है। विशिष्टाद्वैतसे श्रेष्ठ कोई निर्दोष और वैदिक मत नहीं है। श्रीरामनामको छोड़कर प्राणियों को मुक्ति देनेवाला दूसरा कोई भी शब्द कीर्त्तन करनेलायक नहीं है। अर्थात् केवल श्रीरामनामके कीर्त्तनसे ही मुक्ति मिलती है ॥३॥

**ब्रह्मेन्द्रस्त्रिपुरान्तकश्च दहनो ब्राह्मी गणेशोऽन्तकः**
**सूर्यो देवचमूपतिश्च वरुणो वाय्वादिदेवास्तथा।**
**रक्षोयक्षगणोऽथ सिद्धदनुजा नागा दिशां पन्नगा**
**श्रीमद्रामपदारविन्दविमुखत्राणे समर्था न हि ॥४॥**

ब्रह्मा इन्द्र शङ्कर अग्नि ब्राह्मी गणेश यमराज सूर्य कार्त्तिकेय वरुण तथा वायु इत्यादि देव राक्षस यक्षगण सिद्ध दैत्य दिग्गज

और सर्व नागगण इत्यादि कोई भी भगवान् श्रीरामजीके चरणकमलसे विमुख जीवकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हैं। अर्थात् श्रीरामविमुख की रक्षा कोई भी नहीं कर सकता है ॥ ४ ॥

**सद्धर्मः श्रुतिधर्मशास्त्रविहितो ग्राह्यः शुचिर्वैष्णवः**
**सीताराघवविग्रहौ जनयुतौ पूज्यौ शुभैर्वैष्णवैः।**
**वेदान्तप्रतिपादितं सुखकरं सद्युक्तिभिर्भूषितं**
**रामानन्दयतीश्वरस्य रुचिरं मान्यं मतं सन्मतम् ॥५॥**

वेदों और धर्मशास्त्रोंसे विधान किये गये पवित्र और अच्छे वैष्णवधर्मका ग्रहण करना चाहिये। शुभ वैष्णव महानुभावोंको पार्षदसहित भगवान् श्रीसीतारामजीके विग्रह (मूर्त्तियां) पूजने चाहिये। वेदान्तसे प्रतिपादित सुखकर सद्युक्तियोंसे विभूषित और सन्तोंसे माने हुए आचार्यचक्रचूडामणि श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज यतिराजके मतको मानना चाहिये ॥ ५ ॥

**इष्वासेन तथेषुणा रघुपतेर्बाहू वरं चाङ्कितौ**
**गात्रं द्वादशसूर्ध्वपुण्ड्रलसितं वृन्दा गले शोभिता।**
**सीतारामपदाब्जदास्यपरकं यस्याभिधेयं तथा**
**श्रीमत्तारकदीक्षितः स पुरुषः पूज्यः सतां वैष्णवः ॥६॥**

जिस पुरुषकी दोनों भुजा श्रीरामजीके धनुष् और बाणसे अच्छीप्रकार अङ्कित हो, जिसका शरीर द्वादश सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्रों से सुशोभित हो, जिसके गलेमें तुलसी (तुलसीकी कण्ठी अथवा हीरा) शोभायमान हो, जिसका नाम श्रीसीतारामजीके चरणकमलकी दास-

तापरक ( सीतारामदास, रामदास, जानकीदास इत्यादि ) हो और जो पुरुष तारक मन्त्रराज षडक्षर श्रीराममन्त्रसे दीक्षित हो वह पुरुष वैष्णव है और सज्जनोंके द्वारा पूजनीय है। श्रीटीलाचार्यजीने इस श्लोकद्वारा वैष्णवोंके पञ्चसंस्काररूप लक्षणोंको कहा है ॥ ६ ॥

हृद्ये यद्धृदयाम्बुजे हि सदये सीतापती राजते
भूतानां हितचिन्तको गुरुरतो साध्वर्चको धर्मवान्।
सन्निष्ठो हरिवासरादिनिरतः श्रीरामसङ्कीर्त्तको
रामाराधनतत्परः स पुरुषः पूज्यः सतां वैष्णवः ॥७॥

जिस पुरुषके मनोहर और दयायुक्त हृदयकमलमें भगवान् श्रीसीतानाथजी ( श्रीरामजी ) विराजते हों। जो प्राणियोंका हितचिन्तक हो। जो श्रीगुरुदेवमें अनुरागवाला हो। जो साधुओंका पूजक हो और धर्मवान् हो। जो पुरुष सत्पदवाच्य भगवान् श्रीरामजीमें निष्ठा-वाला हो अथवा जो सुन्दर निष्ठावाला हो या जो सन्तोंमें निष्ठा-वाला हो। जो एकादशी श्रीरामनवमी आदि भगवज्जयन्ती श्रीजा-कीनवमी श्रीहनुमज्जयन्ती तथा श्रीरामनन्दजयन्ती आदि आचार्यज-यन्ती इत्यादि व्रतों और उत्सवोंका करनेवाला हो। जो श्रीरामनाम का सङ्कीर्त्तन करता हो। और जो श्रीरामजीके आराधनमें तत्पर हो वह पुरुष वैष्णव है। और सज्जनोंद्वारा पूजनीय है। आचार्यपादने इस श्लोकद्वारा वैष्णवोंके आचाररूप लक्षणोंको कहा है ॥ ७ ॥

मुक्तामुक्तविभेदतो द्विविधतां याता विभिन्ना मिथो
बोद्धारः सुखबुद्धिरूपकृतमुङ्नित्या अचिन्त्याणवः।

**दासाकांक्षितवस्तुदक्षितिसुतानाथस्य दासास्तथा**
**प्रज्ञाप्राणशरीरतः करणतो भिन्नाः समे प्राणिनः ॥८॥**

श्रीटीलाचार्यजी महाराज आठवें श्लोकद्वारा जीवोंके स्वरूपको कहते हैं—मुक्त और बद्ध भेदसे जीव दो प्रकारके हैं। सभी जीव परस्पर भिन्न हैं। अर्थात् जीव भिन्न भिन्न हैं। सर्व शरीरोंमें एक ही आत्मा नहीं है। सभी जीव ज्ञाता ( ज्ञानके आश्रय=ज्ञानवाले ) हैं। सुखरूप ज्ञानरूप स्वकृतकर्मके भोक्ता अचिन्त्य ( घटपटादिके समान चिन्तन करनेके अयोग्य ) और अणुस्वरूप है। तथैव सभी जीव अपने दासोंको अभिलषित वस्तु देनेवाले भगवान् श्रीजानकीनाथजी के दास हैं। बुद्धि पञ्चप्राण सूक्ष्मासूक्ष्मशरीर और एकादश इन्द्रियों से भिन्न हैं ॥ ८ ॥

**सत्वाद्यायतनं विकारकरणी नित्या तथाऽचेतना**
**बद्धानां सुखबुद्धिहृद् रघुवराधीना जगत्सर्जने।**
**मायाख्या प्रकृतिः सती विकृतिभृत् तस्याः परेशेच्छया**
**मूलाद्या निगमान्तविन्निगदिता भेदाश्चतुर्विंशतिः ॥९॥**

आचार्यपाद नवें श्लोकद्वारा प्रकृतितत्त्वका वर्णन करते हैं। विचित्र सृष्टिका हेतु हानेसे प्रकृतिको ही माया कहते हैं। यह प्रकृति सत्त्व रजस् और तमोगुणका आश्रय हैं। विकारोत्पादिका है। नित्य और अचेतन है। बद्ध जीवोंके ( संसारचक्रपतित जीवोंके ) सुख और बुद्धिको हरण करनेवाली है। जगत्की सृष्टिमें श्रीरामजीके आधीन रहती है। अर्थात् केवल प्रकृति सृष्टि नहीं कर सकती किन्तु

सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजीसे अधिष्ठित होकर ही प्रकृति जगत्सृष्टिमें कारण बनती है। क्योंकि प्रकृति अचेतन (जड़) पदार्थ है। चेतनकी सहायता बिना जड़पदार्थ किसी भी कार्यको नहीं कर सकता है। इसलिये सांख्यमतवालोंका सिद्धान्त ठीक नहीं है। प्रकृति सत् है मिथ्या नहीं है और स्वरूपसे विकारी पदार्थ है। परमेश्वर भगवान् श्रीरामजीकी इच्छासे प्रकृतिके मूलप्रकृति; महत्तत्त्व, अहङ्कार श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना घ्राण मन वाक् पाणि पाद पायु और उपस्थ इत्यादि एकादशइन्द्रियां, आकाश वायु तेज जल और पृथिवी आदि पञ्च-महाभूत शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध आदि पञ्च तन्मात्रा इत्यादि चौवीस भेद वेदान्तके ज्ञानियों द्वारा कहे गये हैं ॥९॥

**ध्येयो दिव्यतनुस्तथा शुभगुणाम्भोधिर्जगत्कारणं**
**चिद्रव्यादिविभासकः श्रुतिमतो भक्त्यैव मुक्तिप्रदः।**
**नित्यो ब्रह्मशिवार्चितश्च चिदचिच्छेषी परेशो विभुः**
**सर्वज्ञः प्रणतार्तिहृद् रघुवरः श्रीशोऽवतारी स्वराट् ॥१०॥**

जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजी दशवें श्लोकद्वारा सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजीका वर्णन करते हैं—(मोक्ष चाहनेवालोंको) दिव्य (प्राकृत-विलक्षण) शरीरवाले, शुभ गुणोंके समुद्र, जगत्के कारण, चित् अर्थात् चेतनस्वरूप, सूर्यचन्द्र इत्यादिकोंके भी प्रकाशक, वेदोंद्वारा स्वीकृत, केवल भक्तिसे ही मोक्ष देनेवाले, नित्य अर्थात् उत्पत्तिवि-नाशरहित, ब्रह्मा शिव इत्यादि से पूजित, समस्तचेतनाचेतनपदार्थोंके शेषी अर्थात् सर्व चेतनाचेतनपदार्थोंका चन्दनकुसुमादिकी तरह यथेष्ट

उपयोग करनेवाले, परमेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नमन करनेवालोंके दुःखोंको हरणकरनेवाले, सर्वावतारी अर्थात् सर्व अवतारोंके मूल, स्वराट् और श्रीपदवाच्य जगज्जननी श्रीजानकीजीके पति भगवान् श्रीरामजी हीका ध्यान करना चाहिये ॥ १० ॥

ईशित्री जगतोऽस्य विश्वजननी लावण्यवारांनिधि-
र्वात्सल्यादिगुणावधिः श्रितजनाभीष्टार्थदा सर्ववित् ।
ध्येया सज्जगदीशितू रघुपतेर्विभ्वी प्रिया जानकी
यत्कारुण्यदिदृक्षुणा भगवता सर्वं जगत् सृज्यते ॥११॥

एकादशवें (ग्यारहवें) श्लोकद्वारा श्रीटीलाचार्यजी जगज्जननीका ध्यान करनेके लिये कहते हैं कि—इस जगत्का नियमन करनेवाली, विश्वजननी, लावण्यसमुद्र, वात्सल्य इत्यादि शुभ गुणोंकी अन्तिम मर्यादा अर्थात् जगज्जननी श्रीजानकीजीसे बढ़कर वात्सल्यादि गुण कहीं हैं ही नहीं, निजाश्रितजनोंको इच्छित पदार्थ देनेवाली, सर्वज्ञ, विभु परिमाणवाली सत्य जगत्के नियन्ता भगवान् श्रीरामजीकी प्रिया (वल्लभा) भगवती श्रीजानकीजीका ध्यान करना चाहिये। जिनके कारुण्य (दया)को देखनेकी इच्छासे ही भगवान् श्रीरामजी सम्पूर्ण जगत्की सृष्टि करते हैं। क्योंकि सृष्ट जगत्में जीव जब अत्यन्त दुःखी होते हैं तो जगज्जननी श्रीजानकीजीका उमड़ा हुआ कारुण्य भगवान् देखते हैं। उस समय जगन्माता श्रीजानकीजी अनेकों प्रकारसे जीवोंका उद्धार करती हैं ॥ ११ ॥

हत्वा ज्ञानधनं विनाश्य समयं दत्त्वा गतिं नारकीं

दुःखानाज्ञनकास्त्यजन्ति विषयाः शब्दादयः प्राकृताः।
ये ताँश्च स्वयमुत्सृजन्ति पुरुषास्ते प्राप्नुवन्ति ध्रुवं
पाथेयं खलु मुक्तिधामगमने सीतापतेश्चिन्तनम् ॥१२॥

श्रीटीलाचार्यजी महाराज बारहवें श्लोकद्वारा वैराग्यका उपदेश करते हैं कि दुःखोंके उत्पादक प्राकृत शब्दस्पर्शरसादि विषय ज्ञानरूपी धनका हरण करके, समयको नष्ट करके और नारकी ( नरककी ) गतिको देकर विषयी पुरुषको छोड़ देते है। किन्तु जो पुरुष स्वयं ही उन शब्दस्पर्शरूपरसादि विषयोंका त्याग कर देते हैं वे मुक्तिके धाम ( परात्पर श्रीसाकेतधाम ) के गमनमें पाथेयरूप श्रीसीतानाथ भगवान् श्रीरामजीके तैलधारावत् विच्छेदरहित चिन्तन अर्थात् पराभक्तिको पाते हैं। अर्थात् मोक्षके एकमात्र साधन भक्तिको वैराग्यवान् पुरुष ही पा सकते हैं विषयी पुरुष नहीं ॥ १२ ॥

यज्ञश्चाज्ञकृतिः श्रुतिप्रवचनं कान्तरगं रोदनं
पूत्त कर्म न शर्मणे भवति सत्तीर्थं न तीर्थायते।
सायुज्यप्रसवां शराङ्गरचिता यस्य प्रपत्तिं विना
स त्रैलोक्यनियामकः कमलदृक् सीतापतिः पातु नः ॥१३॥

तेरहवें श्लोकमें आचार्यपाद श्रीरामशरणागतिके माहात्म्यका उपदेश करते हैं कि सायुज्य मुक्ति देनेवाली आनुकूल्यसङ्कल्प, प्रातिकूल्यपरित्याग, रक्षणमें विश्वास, रक्षण करनेके लिये प्रार्थना और दैन्य आदि पञ्च अङ्गोंवाली आत्मनिक्षेपरूप जिनकी प्रपत्ति ( शरणागति )के विना यज्ञ अज्ञकृति और वेदप्रवचन अरण्यरुदन होते हैं, पूर्त्तकर्म अर्थात्

तालाब कुआ इत्यादि खुदवाना आदिकर्म कल्याण देनेवाले नहीं होते तथा सत्तीर्थ तीर्थफल नहीं देते हैं। लोकत्रयनियन्ता कमलके समान नेत्रोंवाले वे भगवान् श्रीसीतानाथजी हम सबकी रक्षा करें ॥ १३ ॥

**स्वाध्यायः समधीयतामुपकृतिः कार्याऽनृतं नोच्यतां**
**हिंसा नैव विधीयतामसुमतां शीतादिकं सह्यताम्।**
**सत्सङ्गः क्रियतां तथा सुकृतिभिः काम्या कृतिस्त्यज्यतां**
**पापेभ्यश्च विरम्यतामसुखहृद् रामः समाश्रीयताम् ॥१४॥**

वेद, उपनिषद गीता और ब्रह्मसूत्र आदि प्रस्थानत्रय और इनके स्वसाम्प्रदायिक भाष्य, नारदपञ्चरात्र, रामायण, महाभारत सात्विक पुराण तथा मन्वादि धर्मशास्त्र साम्प्रदायिक भगवत्स्तोत्र और श्रीवैष्णव-मताब्जभास्करादि आचार्यप्रबन्ध तथा तारकमन्त्रराज षडक्षर श्री राममन्त्रार्थ इत्यादिको स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्यायका अध्ययन करना चाहिये। उपकार करना चाहिये। असत्य नहीं बोलना चाहिये। जीवोंकी हिंसा नहीं करनी चाहिये। शीतोष्णादि द्वन्द्वोंका सहन करना चाहिये। सत्सङ्ग करना चाहिये। तथा पुण्यशाली पुरुषोंको सकामकर्म त्याग देना चाहिये। पापोंको छोड़ देना चाहिये और दुःखोंके हरण करनेवाले भगवान् श्रीरामजीका आश्रय लेना चाहिये। अर्थात् भगवान् श्रीरामजीकी शरणमें जाना चाहिये ॥ १४ ॥

**आनन्दो विधितो जनैरधिगतः स्वानन्दवन्मन्यतां**
**दुःखानाञ्जनकं निजेन विहितं पापं समाबुध्यताम्।**
**सम्पत्तौ तु कृपाम्बुधे रघुपतेर्हेतुः कृपाऽहेतुकी**
**सीतारामसमर्पितश्च सकलं लोके सदा भुज्यताम् ॥१५॥**

दैवयोग से पायेहुए लोगोंके आनन्दको अपने ही आनन्दके समान समझना चाहिये । अर्थात् परसुखमें सुखी होना चाहिये । अपने कियेहुए पापको ही अपने दुःखोंका उत्पादक समझना चाहिये । अर्थात् अमुक पुरुषने हमको दुःख दिया है यह समझकर उसका शत्रु न बनना चाहिये । क्योंकि दुःखके कारण तो अपने पाप ही होते हैं । सम्पत्तिमें हेतु तो कृपासिन्धु भगवान् श्रीरामजीकी अहेतुकी कृपाको समझना चाहिये । क्योंकि भगवान् श्रीरामजीकी कृपासे ही सम्पूर्ण पुरुषार्थ सफल होते हैं । लोकमें सम्पूर्ण पदार्थ भगवान् श्री रामजीको समर्पित करके ही भोगना चाहिये । अर्थात् भगवान् श्री रामजीको अर्पित किये बिना किसी भी वस्तुका उपभोग न करना चाहिये ॥ १५ ॥

**मुक्तिर्यद्भजनादृते भवति नो यागादिना कर्मणा**
**यं ज्ञातुञ्च समाश्रयन्ति विबुधा आचार्यपादाम्बुजम् ।**
**विश्वस्याश्रयभूरचिन्त्यमहिमा स्वीये महिम्नि स्थितः**
**पूर्णं ब्रह्म स पातु भक्तसुखदः सर्वेश्वरो राघवः ॥१६॥**

जिनके भजनके बिना केवल यागादि कर्मोंसे ही मुक्ति नहीं होती है, और जिन्हें जाननेके लिये बुद्धिमान् लोग आचार्यचरण-कमलका समाश्रयण करते हैं, सम्पूर्ण विश्वके आश्रय केवल अपनी महिमामें ही स्थित और भक्तोंको सुखदेनेवाले वे पूर्णब्रह्म सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजी हमारी रक्षा करें ॥ १६ ॥

**टीलाचार्यकृतश्चायं सत्प्रबोधकलानिधिः ।**
**संसारतापहा भूयात् सीतारामप्रसादतः ॥**

द्वारपीठाचार्य श्री १००८ जगद्गुरु श्रीटीलाचार्यजीका बनाया हुआ सुन्दर यह प्रबोधकलानिधिनामक प्रबन्ध श्रीसीतारामजीकी कृपासे संसारतापको नाश करनेवाला हो ।

---

## बोधायनवृत्तिकारजगद्गुरुश्रीपुरुषोत्तमाचार्यनामक महर्षिश्रीबोधायनप्रणीतं

## ❋ प्रपत्तिषट्कम् ❋

रामिति बीजवान् नाथ ! मन्त्रराजो हि तारकः ।
तं जपामि तव प्रीत्यै पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ १ ॥
राम ! दीनोऽनुकूलोऽहं विश्वस्तोऽप्रातिकूल्यवान् ।
त्वयि न्यस्यामि चात्मानं पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ २ ॥
मामनाथं स्वशेषं च न्यासितं स्वार्थमेव हि ।
निर्भरं स्वभरत्वेन पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ ३ ॥
यस्मिन् देहेऽहमानीतः कर्मणा स्वेन राघव ! ।
तदन्ते देहि सायुज्यं पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ ४ ॥
न गतिर्जानकीनाथ ! त्वां विना परमेश्वर ! ।
परां गतिं प्रपन्नं त्वां पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ ५ ॥
मोहितो मायया तेऽहं दैव्या गुणविशिष्टया ।
शरण्यं त्वां प्रपन्नोऽस्मि पाहि मां पुरुषोत्तम ! ॥ ६ ॥
बोधायनमहर्षिश्रीपुरुषोत्तमनिर्मितम् ।
प्रपत्तिषट्कमेतच्छ्रीभक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।

पण्डितराजस्वामिश्रीमाधवाचार्यकाव्यतीर्थप्रणीतं

# श्रीटीलाचार्याष्टकम्

भवाम्भोधेः पोतं विमलमतिभाजां सुमनसां
सुभाष्यश्चानन्दं श्रुतिवचनयुक्तकैर्लसितम्।
सनाथं यश्चक्रे ललितसुरवृक्षेण महता
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ १ ॥

अतर्क्यं तर्केणाऽलममलगुणेशे रघुपतौ
यतश्चैकं शास्त्रं भवति किल मानं भगवति।
इति श्रौतोद्घोषो जयति जयिनो यस्य भुवने
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ २ ॥

सुखासीनं प्रस्थे स्फटिकमिव शुभ्रं स्वमहसा
तृतीयं सच्छास्त्रं नयनमतिदीप्तं च दधतम्।
तपोनिष्ठं भेजे गिरिशमिव यं सिद्धिनिचयो
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ३ ॥

विधाता धातेव व्रतिजनभुवः श्लाघ्यचरणो
धुरीणः सद्धर्मस्य मनुरिव मार्गं जनयताम्।
मदस्योद्भेत्ता यो हरिरिव विपक्षस्थकरिणां
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ४ ॥

तमो विध्वस्तं सज्जनहृदयपद्मैश्च हसितं
तिरोभूता भूताः कुमतिरजनीदक्षगतयः ।
विशिष्टाद्वैते सत्युदयति दिनेशे खलु यतो
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ५ ॥

हरन् क्षोण्या भारं मुनिवरमनोभिः सह च यो
नयन्नन्ते कीर्तिं विवदिषुकदम्बैः सह दिशाम् ।
उदाश्चद्राद्धान्तं सुजनपुलकैः सार्धमनिशं
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ६ ॥

सुधांशौ निर्दोषे स्फुटयति च सत्कैरवगणान्
ककुब्भागान् सर्वान् धवलयति कीर्त्यंशुपटलैः ।
प्रजाते यस्मिन् वैष्णवकुलपयोधिश्च ववृधे
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ७ ॥

पयोहारी श्रीमान् सुरगुरुसमो यस्य च गुरुः
कृती कृष्णाचार्यः किमिति व पयःपानमकरोत् ।
प्रभावी मे शिष्यो धवलगुणसिन्धुर्भवतु वै
वशी टीलाचार्यः स मतिमतिसूक्ष्मां वितरतु ॥ ८ ॥

श्रीरामनारायणपादपद्माश्रितेन डाकोरनिवासिनेदम् ।
कृतं यथाबुद्धि हि माधवेन स तुष्यताम्प्रीतमना अनेन ॥

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थविरचिता

## * श्रीटीलाचार्यपञ्चस्तवी *

श्रेयःप्राप्तिकरी यशःसुखकरी चेतःसमुत्कर्षिणी
संसारादमनी यमार्त्तिशमनी व्यामोहविध्वंसिनी ।
दत्ता येन विदा हि संशयभिदा श्रीरामदिव्यौषधि-
र्टीलाचार्यवरः स देवतरुकृज्जीयात् समाः शाश्वतीः ॥१॥

जयतु जयतु वादे वादिमत्तेभसिंहो
जयतु जयतु रामानन्दवंशाब्धिचन्द्रः ।
जयतु जयतु टीलाऽऽचार्यवर्यो यशस्वी
जयतु जयतु टीलाद्वारपीठाधिराजः ॥ २ ॥

जीवाञ्छुष्यतसस्यवत् सन्निरीक्ष्य
व्याख्याय श्रीभाष्यमानन्दसंज्ञम् ।
मुक्त्यानन्दावर्षिणं वारिदं श्री-
टीलाचार्यं वर्णिनं नित्यमीडे ॥ ३ ॥

अज्ञानकोकोदरदष्टलोकाः संरक्ष्य शिक्षासुधया हि येन ।
संस्थापिता निर्भयरामपादे टीलाऽऽर्यवर्यः सततं स जीयात् ॥

जानकीजानकीकान्तकान्तपादाब्जषट्पदम् ।
सुरद्रुमकृतं वन्दे टीलाचार्यं जगद्गुरुम् ॥ ५ ॥
वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मिता ।
एषा पञ्चस्तवी भूयाद्विश्वभूतविभूतये ॥ ६ ॥

श्रीरामो विजयतेतराम्।

श्रीटीलाद्वारपीठसंस्थापक श्री१००८ जगद्गुरुश्रीटीलाचार्य-यतिराजप्रणीतः

# * प्रपत्तिकुसुमाञ्जलिः *

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यप्रणीतभाषानुवादसहितः

रघुपतेऽहमकिञ्चनतां गतस्तव सुरक्षकतामतिविश्वसन्।
निजभरं निदधाम्यखिलात्मनि त्वयि परेश विभो गुणसागरे ॥१॥

हे परेश! हे विभो! हे रघुनाथजी! अकिञ्चनता (दीनता) को प्राप्त हुआ मैं तुम्हारे सुन्दर रक्षकपनेका अत्यन्त विश्वास करता हुआ समस्त चेतनाचेतनतत्त्वोंके आत्मा और गुणोंके समुद्र तुम्हारे ऊपर अपने भारको रखता हूँ अर्थात् छोड देता हूँ ॥ १ ॥

अननुकूलकुभावविवर्जितस्त्वदनुकूलसुभावगतस्तथा।
अहमनन्यतया क्षितिजापते! सुशरणं चरणञ्च गतोऽस्मिते ॥२॥

हे श्रीजानकीनाथजी! प्रतिकूलभावोंसे रहित तथा तुम्हारे अनुकूलभावोंको प्राप्त हुआ मैं अनन्यभाव से सुन्दर शरणरूप तुम्हारे चरणोंको प्राप्त हुआ हूँ। अर्थात् सर्वश्रेष्ठ शरणरूप आपके चरणोंका आश्रय ग्रहण किया हूँ ॥ २ ॥

मम सुरक्षणकर्मणि यो भरः फलमहञ्च न मे भुवनम्भर!।
अपि तु भक्तसमर्पितहृद् प्रभो! तव ततश्च निजं हि समर्पये ॥३॥

हे निखिल भुवनोंका भरणपोषण करनेवाले भगवन् मेरे सु

क्षणका भार, मेरी प्रपत्तिका फल और मैं (स्वयं) ये सर्व मेरे नहीं हैं। किन्तु हेभक्तजनोंको निजहृदय समर्पण करनेवाले प्रभो ये सब तुम्हारे ही हैं। इसलिये मैं निजको (स्वयंको) तुम्हें समर्पणकरता हूँ ॥३॥

**न हि मिलेद् दयनीयजनश्च ते रघुपते मयि चेन्न दया तव।**
**सुदयनीयजनैकनिधे ततः कुरु दयां मयि नाथ दयाम्बुधे ॥४॥**

हे रघुनाथजी ! यदि मेरे ऊपर तुम्हारी दया न होगी तो तुम्हें दया करने योग्य मनुष्य नहीं मिलेगा। अर्थात् सम्यग्दयनीय-लक्षणयुक्त मैं ही हूँ। इसलिये हे दयनीयजनोंके मुख्यनिधि और हे दयासिन्धु भगवन् मुझपर दया करो ॥ ४ ॥

**त्वमसि नो मदृते दयनीयवानहमपि त्वदृतेऽस्मि न नाथवान्।**
**विधिविनिर्मितमेतदवेक्ष्य तत् करुणया करुणाकर पाहि माम् ॥५॥**

हे करुणाके आकर (खानि) भगवन् तुम मेरे विना दयनीयजनवाले नहीं हो और मैं भी तुम्हारे विना नाथवाला नहीं हूँ। इसलिये हे नाथ यह घटना भाग्य से ही घटित विचारकर कृपया मेरी रक्षा करो ॥ ५ ॥

**सुशरणं चरणं त्वपहाय ते कथमियामहमन्यमकिञ्चनः।**
**रघुपते ! दृढमायतपोतकं त्यजति किं जलधौ लघुवायसः ? ॥६॥**

हे रघुनाथजी ! अकिञ्चन (सर्वविध हीन दीन) मैं श्रेष्ठशरण तुम्हारे चरणको छोड़कर अन्यके प्रति कैसे जाऊं ? हे नाथ ! समुद्र में छोटा कौआ सुदृढ़ (मज़बूत) विशाल जहाजको क्या छोड़ देता है ? ॥ ६ ॥

**इह तिरस्कृततां गमितोऽप्यहं रघुपते ! न जहामि पदञ्च ते ।**
**निजजनन्यवधूतशिशुर्यथा स्वजननीचरणं विजहाति नो ॥७॥**

हे रघुनाथजी ! इसलोकमें तिरस्कारको प्राप्त किये जानेपर भी मैं तुम्हारे चरणको नहीं छोड़ता हूँ । जैसे स्वमातासे तिरस्कृत बालक अपनी मां के चरणको नहीं छोड़ता है ॥ ७ ॥

**वरद दाशरथे वरदापते कुरु कृपामिदमेव च देहि मे ।**
**त्वदरविन्दविलज्जकपादयोर्भवतु जन्मनि जन्मनि मे स्मृतिः ॥८॥**

हे वरदानदेनेवाली श्रीजानकीजीके पति ! हे वरद दाशरथे ! भगवन् कृपा करो । मुझे यही दो कि कमलको भी लजानेवाले तुम्हारे चरणोंका स्मरण मुझे जन्म जन्म में होता रहे ॥ ८ ॥

**वसुधया वसुधात्मजया तथा रुचिरया रुचिरं परिसेवित ! ।**
**रघुपते ! सुलभो जगतीपते ! भव भवाम्बुनिधौ पतितस्य मे ॥९॥**

वसुधा (पृथिवी) सुन्दर वसुधात्मजा श्रीजानकीजीसे सुन्दर प्रकारसे सेवित हे जगत्पति श्रीरघुनाथजी भवसिन्धुमें पतित मुझे सुलभ हो जाओ ॥ ९ ॥

**समवभाति न ते समतां गतस्त्वदधिकोऽपि हि नाथ न कश्चन ।**
**प्रपदनं विदधे पदयोश्च ते निखिलपालक ! पालय मामपि ॥१०॥**

हे नाथ ! तुम्हारी समानताको प्राप्त हुआ कोई विदित नहीं होता है । तुमसे अधिक भी कोई नहीं है । तुम्हारे चरणोंकी प्रपत्ति मै करता हूँ । हे अखिलपालक (सबके पालनेवाले) भगवन् मेरा भी पालन करो ॥ १० ॥

**कृतभवाभव कारणकारण प्रकृतिरक्षक रक्ष्यविलक्षण ! ।**
**रघुपते पदयोः पतिते च ते कुरु कृपां कृपणे मयि पामरे ॥११॥**

हे संसारको बनानेवाले हे उत्पत्तिशून्य हे कारणोंके भी कारण हे प्रकृति (प्रकृति=स्वभाव, प्रजा, प्रकृतितत्त्व, प्रकृतिमण्डल)के रक्षक, रक्ष्य (रक्षणकरने योग्य जड़चेतन)से विलक्षण हे रघुनाथजी! तुम्हारे चरणोंमें पड़े हुए मुझ दीन और पामर पर कृपा करो ॥ ११ ॥

**तव विभोश्चरणं शरणं गतो जन इह त्रिगुणैः परिभूयते ।**
**अभिहिता रघुनायक भारते प्रकृतितारक तारकता क्व ते ॥१२॥**

लोकोत्तर वैभवशाली अथवा सर्वव्यापक तुम्हारे चरणोंकी शरणमें गया हुआ (प्राप्त हुआ) जन इसलोकमें प्रकृति (माया)के तीन गुणोंसे (सत्त्व रजस् और तमस् गुणोंसे) तिरस्कृत हो रहा है। हे रघुनाथजी हे प्रकृतितारक भारतमें कही हुई तुम्हारी तारकता कहां है? ॥ १२ ॥

**अधमताव्यथिता पृथिवी पुरा रघुपते त्वयका परिमण्डिता ।**
**पुनरिदं हि तथा क्षितिमण्डलं भुवनमण्डलमण्डन मण्डय ॥१३॥**

हे रघुनाथजी अधर्मसे दुःखी हुई यह पृथिवी पहले तुमसे ही अलङ्कृत हुई थी। यह पृथिवीमण्डल पुनः उसीप्रकार अधर्मग्रस्त हुआ है। इसलिये हे भुवनमण्डलके अलङ्कार भगवन् तुम पुनः इसे अलङ्कृत करो ॥ १३ ॥

**रघुपते त्वयकैव युगे युगे समवतीर्य हि दक्षकुरक्षसाम् ।**
**मलमखण्ड्यमखण्डच! सुखण्डितं विजहि मत्प्रतिघादिकराक्षसान्॥१४॥**

हे रघुनाथजी युगयुगमें अवतार लेकर तुमने ही चतुर और दुष्ट राक्षसोंके अखण्डनीय बल (सैन्य)का अच्छी प्रकारसे खण्डन किया है। किसीसे भी खण्डन न करनेलायक (अखण्डनीय) हे नाथ तुम मेरे क्रोधादि राक्षसोंको मारो ॥ १४ ॥

**अदयताश्च गतेऽभयता कुतो न च भयं सदये त्वयि राघव!।**
**अभयतार्थमतः शरणं विभो त्वदपरं पुरुषं न विभावये ॥१५॥**

हे रघुनन्दन! तुम्हारे निर्दय होनेपर निर्भयता कहांसे हो सकती है? और तुम्हारे दयायुक्त होनेपर भय भी कहांसे हो सकता है? अर्थात् नहीं हो सकता है। इसलिये हे विभो हे भगवन् निर्भयताके लिये शरण (रक्षक)रूपसे तुम्हारे सिवाय अन्य पुरुषका विचार मैं नही करता हूँ। अर्थात् सर्व प्रकारसे अभय होनेके लिये मैं रक्षकरूपसे (शरणरूपसे) केवल तुमको ही स्वीकार करता हूं ॥१५॥

**कृतमतिर्जगतः परिपालने सुकृपणस्य तदा मम रक्षणे।**
**कृतमतिप्रभृतेः सहकारिणश्च विफलं जगदीश गवेषणम् ॥१६॥**

हे जगदीश! भगवन् श्रीरामजी यदि तुमने जगत्को अच्छी प्रकारसे पालनेका विचार किया है तो अत्यन्तदीन मेरे रक्षणके लिये मेरे कर्म और ज्ञान आदि सहकारी कारणोंका खोजना निष्फल है। तात्पर्य यह है कि हे नाथ! यदि तुम यह कहो कि "रक्षणमें कारणरूप कर्म ज्ञान भक्ति इत्यादिमें से तुम्हारे पास एक भी नहीं तो हम तुम्हारा रक्षण कैसे करें? कहीं कारण विना कार्य होता है?" इसपर मेरा कहना है कि हे नाथ तुम्हारा यह कथन व्यर्थ है।

क्योंकि तुमने समस्त जगत्के रक्षण करनेका सङ्कल्प किया है। मैं भी जगत्के अन्तर्गत हूँ। इसलिये तुम मेरा रक्षण करोगे ही। तब मेरे कर्मज्ञानादि क्यों ढूंढ़ते हो॥ १६॥

**टीलाचार्यकृतश्चायं प्रपत्तिकुसुमाञ्जलिः।**
**भूयाद्रामप्रसादेन भवपाथोधितारकः॥**

श्रीसाकेतनिवासाचार्यनामक आचार्यशिरोमणि श्री १००८ जगद्गुरु-श्रीटीलाचार्यजीमहाराज व्रतिराजद्वारानिर्मित यह प्रपत्तिकुसुमाञ्जलि भगवान् श्रीरामजीकी कृपासे संसारसमुद्रका तारनेवाला हो।

**स्वामिश्री वैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थविरचितं**

## ❋ परम्परावन्दनम् ❋

श्रीरामं वसुधात्मजामनिलजं वेधोवशिष्ठौ तथा
शक्तेः पुत्रमथो शुकेन सहितं व्यासञ्च बोधायनम्।
श्रीगङ्गाधरदेशिकं वरसदाचार्यं च रामेश्वरं
द्वारं देवयुतं श्रुतार्यसहित श्यामं चिदानन्दकम्॥ १॥

पूर्णानन्दयुतं श्रियार्यसहितं हर्यार्यवेदान्तिनं
त्रय्यन्तार्थविदं त्रिदण्डिषु मणिं श्रीराघवानन्दकम्॥
आनन्दाख्यसुभाष्यरत्नरचकं रामं महायोगिनं
रामानन्दमुनिं यतिक्षितिपतिं वन्दामहे शाश्वतम्॥ २॥

श्रीरामो विजयतेतराम् ।

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवाचार्यवेदान्ततीर्थप्रणीतं

## जगद्गुरुश्रीमङ्गलाचार्यमहामुनीन्द्राष्टकम्

सद्विद्यातटिनीसुजन्मशिखरी चन्द्रश्च वेदाम्बुधे-
स्तत्तद्वादिकुतर्कघोररजनीनाशे तु यो भास्करः ।
संसाराध्वविधावनश्रमजुषां विश्रामदायिद्रुमः
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥१॥

शश्वच्चेह यदीयपद्धतिजुषां शुद्धा मतिर्जायते
यत्पादाब्जसमाश्रितस्य यमुनाभ्रातुर्भयं नो भवेत् ।
श्रीसीतारघुनाथपादजलजप्रीतिः समुत्पद्यते
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥२॥

मुक्तानाञ्जननी यदीयकरुणागङ्गाऽघविध्वंसिनी
यद्ग्रन्थाः परिशीलिताः सुकुशलाश्चेतोभ्रमच्छेदने ।
सिद्धान्तः खलु यस्य वैदिकविशिष्टाद्वैतनामा जयी
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥३॥

आनन्दाभिधभाष्यदेवतरुटीका मञ्जरीनामिका
येनाचार्यवरेण संविरचिता सत्यार्थसंलब्धये ।
व्याख्याकेलिकरेण येन हृदये धीचित्रमुच्चित्रितं
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥४॥

संसारोरगसाध्वसं समवलोक्यात्राखिलप्राणिनां
मृत्योर्भीतिहरं सुखाकरवरं मुक्तिप्रदञ्चाक्षयम् ।
श्रीमद्रामरसायनं करुणया योऽलौकिकं दत्तवान्
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥५॥

रामानन्दयतीन्द्रवंशजलधेः संवर्द्धकश्चन्द्रमा-
ष्टीलापीठपतिर्य उज्ज्वलमतिर्मौञ्जीधरो भूतिमान् ।
यन्मूर्धा सुजटोर्ध्वपुण्ड्रललितः कण्ठे च वृन्दामणिः
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥६॥

गोमत्याश्च तटे महाद्युतिकरः सद्वैष्णवैः सेवितो
डाकोरे खलु खाकचौकसुमठो येन प्रतिष्ठापितः ।
सद्वन्द्यस्तपसां निधिश्च भगवद्ध्याने रतः सिद्धिमान्
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥७॥

सीताराघवपादपद्ममधुलिड्भावं सुखञ्चार्पय-
न्नार्त्तत्राणपरायणो जगति यो योगीन्द्रचूडामणिः ।
भक्तिज्ञानविरागसिन्धुरनिशं वेदान्तचिन्तापरः
स श्रीमङ्गलदासदेशिकवरः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥८॥

वैष्णवभाष्यकारश्रीवैष्णवाचार्यनिर्मितम् ।
मङ्गलाष्टकमेतद्धि मङ्गलाय सतां भवेत् ॥

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।

डाकोरस्थप्रधानश्रीटीलाद्वारपीठसंस्थापक श्री१००८ जगद्गुरु
श्रीमङ्गलाचार्यमहामुनीन्द्रप्रणीतो

# ❊ वेदान्तचिन्तामणिः ❊

वैष्णवभाष्यकारस्वामिश्री वैष्णवाचार्यप्रणीतभाषानुवादसहितः।

श्रीरामाद्विततां प्रणम्य हि निजामाचार्यसत्सन्तति
पीठाचार्यसुमङ्गलार्यकृतिना रामाय भक्त्याऽर्पितः ।
नानातर्कतमोविमूढमनसां वेदान्तबोधार्थिनां
सद्बोधाय महामहो वितनुतां वेदान्तचिन्तामणिः ॥१॥

श्रीरामजीसे विस्तृत स्वाचार्यपरम्पराको प्रणाम करके पुण्यशाली प्रधानश्रीटीलाद्वारपीठाचार्य जगद्गुरुश्रीमङ्गलाचार्यमहामुनीन्द्रके द्वारा भगवान् श्रीरामजीको भक्तिसे अर्पित हुआ यह वेदान्तचिन्तामणि ग्रन्थ विविधतर्कान्धकारसे विमूढ चित्तवाले वेदान्ततत्त्वजिज्ञासुओंके सद्बोधके लिये महान् प्रकाश दे ॥ १ ॥

शेषस्तनू रघुपतेरणुचेतनोंऽश–
श्चान्यो मतेर्हि करणाद्वपुषोऽप्यसुभ्यः ।
नित्योऽजडः परवशः कृतिभुक्तिशाली
भिन्नोऽसुभृत् प्रतिवपुः सुखबुद्धिरूपः ॥२॥

आचार्यशिरोमणि श्री१००८ जगद्गुरुश्रीमङ्गलाजार्यजीमहाराज महामुनीन्द्र द्वितीय श्लोकमें जीवके स्वरूपका निरूपण करते हैं। जीव श्रीरघुनाथजीका शेष (ताम्बूलकुसुमादिवत् सर्वथा उपभोगके

लायक) शरीर और अणु चेतन अंश है। बुद्धि इन्द्रिय शरीर और प्राणोंसे भी भिन्न है। नित्य (उत्पत्तिविनाशरहित) अजड़ (स्वयम्प्रकाश) पराधीन कर्त्ता तथा भोक्ता है। प्रत्येक शरीरमें भिन्न भिन्न है एक नहीं। सुखरूप और ज्ञानस्वरूप है॥ २॥

मुक्ताविमुक्तविधया द्विविधत्वमाप्ता
जीवा मिथो जनकजापतितोऽपि भिन्नाः।
मुक्ता अनन्तभजनाज्जनिमृत्युमुक्ता
बद्धास्त्वनन्तजनिकर्मसुबन्धबद्धाः ॥३॥

मुक्त और अमुक्त (बद्ध) भेदसे जीव दो प्रकारके हैं। सर्व जीव परस्पर भिन्न भिन्न हैं। अर्थात् प्रत्येक जीव स्वान्यजीवसे भिन्न है। तथैव सभी जीव सर्वेश्वर भगवान् श्रीजानकीनाथजीसे भी भिन्न हैं। अर्थात् जीव ही ब्रह्म (ईश्वर) नहीं है। भगवान्के भजनसे जन्म और मृत्युसे छूटे हुए जीव मुक्त हैं। अनन्तजन्मोपार्जित कर्मरूपी सुदृढ बन्धनसे बंधे हुए जीव बद्ध (अमुक्त) हैं॥ ३॥

शुद्धाविशुद्धभिदया द्विविधश्च सत्वं
कालो मतिर्गतमतेरचितः प्रभेदाः।
साकेतनित्यपरधामपदाभिधेयं
सत्वं विशुद्धमजडं प्रकृतेर्विभिन्नम् ॥४॥

अब आचार्यपाद अचेतनतत्त्वका वर्णन करते हैं। शुद्धसत्त्व, अशुद्धसत्त्व (मिश्रसत्त्व) काल और बुद्धि (मति=ज्ञान) ये चार अचित् तत्त्वके भेद हैं। अब शुद्धसत्व (रजोगुण और तमोगुणसे विहीन. केवल

सत्त्व) का वर्णन करते हैं। शुद्धसत्व साकेत नित्यधाम तथा परधाम आदि पदोंसे कहा जाता है। अर्थात् साकेत नित्यधाम परधाम आदि शुद्धसत्वके ही पर्याय हैं। शुद्धसत्व प्रकृतितत्त्व से भिन्न है ॥४॥

**नित्याऽकृतिर्गुणवती प्रकृतिः परार्था**
**तथ्या च मूलमहदादिकभेदभिन्ना।**
**भूतादिकव्यवहृतेर्जनको हि कालो**
**नित्यो विभुर्भुवननाथवपुर्जडश्च ॥ ५ ॥**

पांचवें श्लोकके पूर्वार्धद्वारा प्रकृतितत्त्व (माया)का वर्णन किया जाता हैं। प्रकृति नित्य, कृतिरहित (जड़ होनेसे कर्तृत्वशून्य) तथा सत्व रजस् और तमस् तीन गुणोंवाली है। परार्थ और सत्य है। तथा मूलप्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण मन वाक् पाणि पाद पायु (गुद) और उपस्थ इत्यादि एकादश इन्द्रियाँ, आकाश, वायु, तेज, जल और पृथिवी आदि पञ्च महाभूत तथा शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध आदि पञ्च तन्मात्रा आदि चौवीस भेदवाली है। अब पांचवें श्लोकके उत्तरार्धमें कालतत्त्वका वर्णन करते हैं। भूत वर्त्तमान और भविष्यत् इत्यादि व्यवहारोंका कारण कालतत्त्व है। काल नित्य (उत्पत्तिविनाशरहित) और विभुपरिमाणवाला (व्यापक) है। और निखिलब्रह्माण्डनायक भगवान् श्रीरामजीका शरीर है ॥ ५ ॥

**नित्या तथा सविषया जडताविहीना**
**विभ्वी मतिर्मदयाप्रभृतिस्वरूपा।**

**प्रामाण्यमत्र सुमतं स्वत एव चास्या**
**याथार्थ्यकं विषयसत्यतया तथा च ॥ ६ ॥**

अब ज्ञानतत्त्वका (धर्मभूतज्ञान का) वर्णन किया जाता है। मति प्रज्ञा बुद्धि मनीषा धी इत्यादि ज्ञानके पर्याय हैं। ज्ञान नित्य अर्थात् उत्पत्तिविनाशशून्य द्रव्य है। 'मेरा ज्ञान नष्ट हुआ' और 'मेरा ज्ञान उत्पन्न हुआ' इत्यादि व्यवहार तो ज्ञानके संकोच और विकास के कारण होते हैं। तमोविशेषके सन्निधानसे निद्रा और असन्निधान (हटजाने)से जागृति दशा होती है। कोई भी धर्मभूतज्ञान निर्विषय नहीं होता है इसलिये सिद्धान्तमें धर्मभूत ज्ञानको सविषय ही माना गया है। ज्ञान अजड (स्वयंप्रकाश) पदार्थ है। तथैव ज्ञान विभुपरिमाणवाला पदार्थ है। मद दया राग द्वेष क्षमा तृष्णा श्रद्धा इत्यादि ज्ञानकी ही अवस्था विशेष हैं। विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तमें ज्ञानको स्वतःप्रमाण वस्तु माना गया है। ज्ञानविषयोंके सत्य होनेके कारणसे सभी ज्ञान यथार्थ माने जाते हैं। विषयव्यवहारके बाधित होनेसे ही ज्ञानमें भ्रमत्व इत्यादि माने जाते हैं ॥६॥

**लोकैकहेतुरजडश्चिदचिद्विशिष्टः**
**श्रेयोगुणैकजलधिर्हतदोषवृन्दः ।**
**सर्वेश्वरः क्षितिजया सह दिव्यदेहो**
**ध्येयोऽमृताय सुजनैरिह जानकीशः ॥७॥**

आचार्यशिरोमणि श्रीमङ्गलाचार्यजी महाराज महामुनीन्द्र अब ईश्वरतत्त्वका वर्णन करते हुए कहते हैं कि—सज्जनोंको लोकके

अद्वितीय हेतु अर्थात् जगत्के अभिन्ननिमित्तोपादानकारण, शरीररूप समस्त चेतनाचेतनों से विशिष्ट अर्थात् सर्वशरीरी, कल्याणगुणोंके समुद्र, समस्तदोषरहित, दिव्य (अप्राकृत) देहवाले सर्वेश्वर श्रीजानकीनाथजीका श्रीजानकीजीके सहित ध्यान करना चाहिये ॥७॥

**सच्चित्सुखं च सुखिसृष्टिकरं परेशं**
**व्यूहार्च्यमूर्त्तिविभवप्रभवं च हृत्स्थम् ।**
**रामं वदान्यविभुसर्वविदं भजध्वं**
**हालाहलस्य सदृशान् विषयान् विहाय ॥८॥**

आचार्यपाद कहते हैं कि—हलाहलके सदृश विषयोंको छोड़कर सच्चिदानन्दस्वरूप, आनन्दमय, सृष्टिकर्त्ता, परमेश्वर, वासुदेवादि व्यूह अर्चावतार (भगवन्मूर्त्ति) और विभव अर्थात् मत्स्यादि अवतारोंके कारण, हृदयमें रहनेवाले अर्थात् सर्वान्तर्यामी, दाता, विभुस्वरूप और सर्वज्ञ भगवान् श्रीरामजीको भजो अर्थात् सेवन करो ॥८॥

**वेदान्तवेद्यकरुणाकरनित्यबन्धोः**
**सीतापतेः श्रितजनाहितनाशकर्त्तुः ।**
**भव्यां भवाब्धितरणे तरणिं प्रपत्तिं**
**भक्तिं विना च मनुजो लभते न मुक्तिम् ॥९॥**

वेदान्तवेद्य (वेदान्तसे जाननेयोग्य) करुणाके आकर, नित्य-बन्धु स्वाश्रितजनोंके अहितका नाशकरनेवाले श्रीसीतानाथजीकी भव-समुद्र तरनेमें नौकास्वरूप प्रपत्ति (शरणागति) और भक्तिके विना मनुष्य मुक्तिको नहीं पाता है ॥९॥

धूल्या मुनीन्द्रगृहिणीजडतापहर्त्तु-
ब्रह्मेश्वराद्यदितिनन्दनवन्दिताग्रात् ।
भागीरथीप्रभृतितीर्थगणैककन्दा-
न्नान्या गतिः सुखदरामपदारविन्दात् ॥१०॥

धूलिसे मुनीन्द्रपत्नी श्रीअहिल्याजीकी जड़ताके (शिलापनके) हरण करनेवाले, ब्रह्मा, शम्भु इत्यादि देवोंसे वन्दित अग्रभागवाले तथा भागीरथी (गङ्गा) इत्यादि तीर्थगणोंके कन्दभूत (मूलस्वरूप) सुखप्रद भगवान् श्रीरामजीके चरणारविन्दको छोड़कर दूसरी गति नहीं है। अर्थात् एकमात्र श्रीरामजीके चरणारविन्द ही जीवोंके लिये गति (उपाय) हैं ॥१०॥

श्रियः श्रियै नमः।

श्री ११०८ जगद्गुरुश्रीसदानन्दाचार्यप्रणीतं

## श्रीबोधायनपञ्चकम्

सीताराघवपादपद्मनिरतः पद्मासनेनास्थित-
स्तत्त्वज्ञाननिधिस्त्रिदण्डलसितो विज्ञानमुद्राधरः ।
गौरो ध्यानपरायणोऽर्धविकसन्नीलाब्जतुल्येक्षणः
श्रीबोधायनवृत्तिकृद्विजयतां बोधायनः शाश्वतम् ॥१॥
योगत्यक्तकषायशुद्धहृदयः काषायवर्णाम्बरो
न्यग्रोधस्य तले वशिष्टतनयामूले कुरङ्गत्वचि ।

आसीनः सुशिखोर्ध्वपुण्ड्रलसितो यज्ञोपवीती शमी
श्रीबोधायनवृत्तिकृद्विजयतां बोधायनः शाश्वतम् ॥२॥

पार्श्वे भाति शुभं कमण्डलु तथा दूर्वान्विता भूमिका
मीमांसार्थविकासिनी सुमहती वृत्तिः पुरो यस्य सः ।
सद्वायुव्यजनैस्तथा च तरुभिः पुष्पैः समासेवितः
श्रीबोधायनवृत्तिकृद्विजयतां बोधायनः शाश्वतम् ॥३॥

रामो ब्रह्म परात्परं श्रुतिमतं भक्त्यैव निःश्रेयसं
शेषा येन च शेषिणो रघुपतेर्जीवा इति स्वीकृतम् ।
श्रौतं युक्तियुतं मतं खलु विशिष्टाद्वैतकं यस्य स
श्रीबोधायनवृत्तिकृद्विजयतां बोधायनः शाश्वतम् ॥४॥

मन्त्रो रामषडक्षरः शुकमुनेर्वैयासिकेर्योऽलभद्
ग्रीवायां तुलसीस्रजौ च परितो भास्वत्प्रभामण्डलम् ।
आचार्यः पुरुषोत्तमः सदपरं यस्याभिधेयं हि स
श्रीबोधायनवृत्तिकृद्विजयतां बोधायनः शाश्वतम् ॥५॥

बोधायनप्रशिष्यश्रीसदानन्दार्यनिर्मितम् ।
पठतां पञ्चकञ्चैतद् भूयाच्छ्रेयोविधायकम् ॥६॥

सूचना—बोधायनजयन्ती हिदुस्तानी हिसाबसे पौष कृ० १२ को मनाना चाहिये ।

## प्रधानश्रीटीलाद्वारपीठ (श्रीदाऊजीमन्दिर) डाकोर की आचार्यपरम्परा—

१ सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजी ।
२ जगज्जननी श्रीजानकीजी ।
३ नित्यपार्षद श्रीहनुमानजी ।
४ श्रीब्रह्माजी ।
५ श्रीवशिष्टजी ।
६ श्रीपराशरजी ।
७ ब्रह्मसूत्रकार श्रीवेदव्यासजी ।
८ श्रीशुकदेवजी ।
९ बोधायनवृत्तिकार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी (बोधायन, उपवर्ष)
१० जगद्गुरु श्रीगङ्गाधराचार्यजी
११ ,, ,, सदानन्दाचार्यजी
१२ ,, ,, रामेश्वरानन्दाचार्यजी
१३ ,, ,, द्वारानन्दाचार्यजी
१४ ,, ,, देवानन्दाचार्यजी
१५ ,, ,, श्यामानन्दाचायजी
१६ जगद्गुरु श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी
१७ ,, ,, चिदानन्दाचार्यजी
१८ ,, ,, पूर्णानन्दाचार्यजी
१९ ,, ,, श्रियानन्दाचार्यजी
२० ,, ,, हर्यानन्दाचार्यजी
२१ ,, ,, राघवानन्दाचार्यजी
२२ ,, ,, रामानन्दाचार्यजी
यतिराज आनन्दभाष्यकार
२३ ,, अनन्तानन्दाचार्यजी
२४ ,, ,, कृष्णदासजीपयोहारी
२५ ,, ,, साकेतनिवासाचार्य (टीलाचायजी)
२६ ,, ,, भागीरथदासजी
२७ ,, ,, गङ्गाधरदासजी
२८ ,, ,, रामदासजी
२९ ,, ,, अंगदपरमानंददास,,
३० जगद्गुरु श्री रामछबीलदासजी
३१ ,, ,, गोवर्धनदासजी
३२ ,, ,, जानकीदासजी
३३ ,, ,, सहजरामदासजी
३४ ,, ,, स्वामीमङ्गलदासाचार्यजी (डाकोर)
३५ ,, ,, भरतदासजी
३६ ,, ,, मथुरादासजी
३७ ,, ,, दामोदरदासजी
३८ ,, ,, सरयूदासजी
३९ ,, ,, मदनमोहनदासजी
४० ,, ,, गोकुलदासजी
४१ ,, ,, रामनारायणदासजी